A R DIGITECH
International Journal Of Engineering, Education And Technology (ARDIJEET)
www.ardigitech.in ISSN 2320-883X,VOLUME 11 ISSUE 01 20/01/2023

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

डॉ. रेवत सिंह, शोध निर्देशक, श्री अग्रसेन स्नात्तकोत्तर शिक्षा महाविालय, केशव विधापीठ, जामडोली, जयपुर
मनोज कुमार मीणा, शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की भाषा सरल है, जिसमें शिक्षा के महत्व को प्रतिपादित करने के साथ–साथ भारतीय समाज को भी शैक्षिक दृष्टि से उन्नत एवं विकसित बनाया है। प्रस्तुत शोध में स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु दार्शनिक विधि का प्रयोग किया गया है। शोध का मुख्य आधार स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की समसामयिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्दावली (की वर्डस्) : स्वामी दयानन्द सरस्वती, शैक्षिक दर्शन, समसामयिक, परिप्रेक्ष्य, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना :

स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षा का मुख्य मंतव्य यही था की संपूर्ण विश्व का कल्याण हो तथा समाज में फैले अंध–विश्वासों का समूल नाश हो ताकि संपूर्ण मानव जाति का हित हो सके। उनके लिए शिक्षा मात्र समाज सेवा न होकर प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना था। स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का जो महत्व दिखाई दे रहा है उसका एक स्वाभाविक परिणाम यह निकलता है कि शिक्षा को केवल व्यक्तिगत मांग व पूर्ति के व्यापारिक सिद्धांत पर नहीं छोड़ा जा सकता। स्वामी दयानन्द सरस्वती की दृष्टि में मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा प्राप्त करके सत्य के मार्ग पर चलते हुए राट्र निर्माण को अपना अमूल्य योगदान देना है।

जीवन परिचय :

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में गुजरात के काठियावाड़ की मोरवी रियासत के टंकारा कस्बे में एक अत्यंत धार्मिक परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री कृण जी त्रिवेदी थे तथा इनकी माता का नाम यशोदा बाई था। इनके बचपन का मूल नाम मूल शंकर था। इनके गुरु का नाम वीरजानंद था। इन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। उनकी मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 में अजमेर (राज) में हुई थी।

दयानंद सरस्वती का शैक्षिक दर्शन :

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन को निम्न बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है –

वेदों को सत्य ग्रंथ मानना :–

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक है। वेदों में ईश्वर की निष्ठा समाहित है। अतः वेद अक्षरशः सत्य हैं। सत्य होने के कारण यह ज्ञान सृष्टि के पूर्व में भी अस्तित्व में था।

सामाजिक कुरीतियों और आंविश्वासों का विरोध :–

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बाल विवाह, विधवा विवाह, अस्पृश्यता तथा अनमोल विवाह आदि का विरोध किया तथा अपने ग्रंथों व व्याख्यानों में इनका विरोध करते हुए सामाजिक जागृति का संदेश दिया।

स्त्रियों की स्वतंत्रता और गरिमा का समर्थन करना :

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में स्त्रियों के प्रति प्रचलित भेदभाव को विरोध किया तथा वह अन्य शास्त्रों की प्रमाणिक व्याख्या द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि स्त्रियों की स्वतंत्रता के निषेध का कोई धार्मिक या शास्त्र सम्मत नहीं है। अतः महिलाओं को पुरुषों के बराबर स्वतंत्रता प्रदान की।

मूर्ति पूजा का विरोध करना :

स्वामी दयानन्द सरस्वती इस बात पर बल दिया कि मूर्ति पूजा न तो वेद सम्मत है और ना ही कोई इसका धार्मिक प्रमाण है। मूर्ति में ईश्वर के अस्तित्व को मानना तो मात्र एक अंधविश्वास के समान है।

शुद्धि आंदोलन की शुरुआत करना :–

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने घोषणा कर दी कि जिन हिंदुओं ने हिंदू धर्म का त्याग कर अन्य धर्म को ग्रहण कर लिया है यदि वे पुनः हिंदू धर्म स्वीकार करना चाहे तो ऐसा कर सकते हैं। इस प्रकार से उन्होंने हिंदू धर्म पर एक बहुत बड़ा उपकार करते हुए उसे फिर से यथार्थ के धरातल पर खड़ा कर दिया।

स्वराज की स्थापना पर बल देना :

स्वामी दयानन्द सरस्वती ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए' का नारा बुलंद किया। बाल गंगाार तिलक के अनुसार स्वामी दयानन्द सरस्वती ही 'स्वराज' के सर्वप्रथम संदेशवाहक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही आधुनिक भारत के जन मानस में स्वराज का बीज बोया था।

हिंदी भाषा का समर्थन करना :–

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वीकार किया कि जन सामान्य में सर्वाधिक प्रचलित हिंदी भाषा को सबके द्वारा अपनाए जाने से देश की भावात्मक एकता को सुनिश्चित किया जा सकता है, इसलिए स्वयं की मातृभाषा गुजराती होते हुए भी तथा संस्कृत के प्रखंड विद्वान होते हुए भी इन्होंने अपने व्याख्यानों व संदेशों को देश के कोने–कोने तक पहुँचाने में हिंदी भाषा का प्रयोग किया था। इन्होंने अपने महान ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना भी सरल हिंदी भाषा में की थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता :

- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना बताया जो आज भी प्रासंगिक है।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती के शिक्षा दर्शन से बालकों में देश–प्रेम व देश हित की भावना का विकास होगा।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती सभी धर्म को शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी सभी वर्गों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान की जा रही है, अतः इनके यह विचार भी वर्तमान में प्रासंगिक है।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन का अनुशीलन करने से सामाजिक कुरीतियों का पतन होगा वह श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन से व्यक्ति कर्म के प्रति प्रवृत्त होगा, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सकेगा।
- ❖ स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा सर्व जन व जनसाधारण को प्रदान की गई शिक्षा परी–पाटी को अपनाने से 'वसुदेव कुटुंबकम' की भावना का विकास होगा।

निष्कर्ष :

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक दर्शन में अनेक विचार सिद्धांत तथा विशेषताएँ ऐसे हैं जो वर्तमान भारतीय समाज में प्रासंगिक है। जैसे– शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, छात्र–अयापक सम्बंध, अनुशासन, स्वराज तथा वेदों पर आधारित शिक्षा आदि। इन विचारों सिद्धांतों तथा विशेषताओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शामिल करके अनेक प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. अवस्थी ए., डॉ. अवस्थी आर. के. ''भारतीय राजनीतिक चिंतन'' रिसर्च पब्लिकेशंस, जयपुर, संस्करण 2018
- सिंह बी. के. ''स्वामी दयानन्द '' नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, संस्करण 2004
- कुमार श्री ए. के. ''महान व्यक्तित्व दयानन्द सरस्वती'' चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, संस्करण 2002
- www.dp.samachar.com
- वर्मा श्री राम ''भारतीय राजनीतिक विचारक'' कॉलेज बुक सेंटर, जयपुर, संस्करण 2019
- डॉ. चतुर्वेदी श्याम मधुकर, डॉ. चतुर्वेदी मीनाक्षी ''प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक'' कॉलेज बुक हाउस, जयपुर, संस्करण 2021
- डॉ. जैन पुखराज ''भारतीय राजनीतिक विचारक'' साहित्य भवन पब्लिकेशंस, आगरा, संस्करण 2012